शैशवावस्था में शिक्षा का स्वरूप

(NATURE OF EDUCATION IN INFANCY)

वैलेन्टाइन ने शैशवावस्था को सीखने का आदर्श काल ("Ideal period for learning माना है। वाटसन ने कहा है"शैशवावस्था में सीखने की सीमा और तीव्रता, विकास की और किसी अवस्था की तुलना में बहुत अधिक होती है।" "The scope and intensity of learning during infancy exceeds that of period of development." any other - Watson (p. 155) इस कथन को ध्यान में रखकर, शैशवावस्था में शिक्षा का आयोजन निम्नांकित प्रकार से किया जाना चाहिए ।

1. **उचित वातावरण** (Proper Environment)- शिशु अपने विकास के लिए शान्त, स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण चाहता है। अतः घर और विद्यालय में उसे इस प्रकार का वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए।

2. **उचित व्यवहार** (Proper Behaviour)- शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरो पर निर्भर रहता है। उसके माता-पिता और शिक्षक को उसकी इस असहाय स्थिति से लाभ नहीं उठाना चाहिए। अत उन्हें उसे डाटना या पीटना नहीं चाहिए और न उसे भय या क्रोध दिखाना चाहिए। इसके विपरीत, उन्हें उसके प्रति सदैव प्रेम, शिष्टता और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए।

3. **जिज्ञासा की सन्तुष्टि -** को एवं क्रो (Crow and Crow) (op. cit.. p. 58) अनुसार "शिशु शीघ्र ही अपनी आस-पास की वस्तुओं के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने लगता है। वह उनके विषय में अनेक प्रकार के प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शान्त करना चाहता है। उसके माता-पिता और शिक्षक को उसके प्रश्नों के उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए।

4. **वास्तविकता का ज्ञान** (Knowledge of Reality) शिशु कल्पना के जगत् में विचरण करता है और उसी को वास्तविक संसार समझता है अत: उसे ऐसे विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए जो उसे वास्तविकता के निकट लायें। मॉण्टेसरी पद्धति में परियों की कहानियों को इसलिए स्थान नहीं दिया गया है, क्योंकि वे बालक को वास्तविकता से दूर ले जाती है।

5. **आत्म निर्भरता का विकास** (Development of Self Dependence) आत्म-निर्भरता से शिशु को स्वयं सीखने, काम करने और विकास करने की प्रेरणा मिलती है। अतः उसको स्वतन्त्रता प्रदान करके, आत्म-निर्भर बनने का अवसर दिया जाना चाहिए।

6. **निहित गुणों का विकास** (Development of Innate Traits) शिशु में अनेक निहित गुण होते है। अत उसे इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे उसमें इन गुणों का विकास हो। यही कारण है कि आधुनिक युग में शिशु-शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

7. **सामाजिक भावना का विकास** (Development of Sociability) शैशवावस्था के अन्तिम भाग में शिशु दूसरे बालकों के साथ मिलना-जुलना और खेलना पसन्द करता है उसे इन बातों का अवसर दिया जाना चाहिए, ताकि उसमें सामाजिक भावना का विकास हो।

8. **आत्म-प्रदर्शन का अवसर** (Opportunities of Self Demonstration) शिशु प्रदर्शन की भावना होती है। अत: उसे ऐसे कार्य करने के अवसर दिये जाने चाहिए जिनके द्वारा वह अपन इस भावना को व्यक्त कर सके।

9. **मानसिक क्रियाओं का अवसर** (Opportunities for Mental Activitie मानसिक क्रियाओं की तीव्रता होती है। अत: उसे सोच-विचारने के अधिक-से-अधिक अवसर दिये जाने चाहिए।

10. **अच्छी आदतों का निर्माण** (Formation of Good Habits)- ड्राइडेन (Dryden) का कथन है- पहले हम अपनी आदतों का निर्माण करते हैं और फिर हमारी आदतें हमारा निर्माण करती है।" शिशु के माता-पिता और शिक्षक को इस सारgarbhitको सदैव स्मरण रखना चाहिए। अब उन्हें उसमे सत्य बोलने, बड़ो का आदर करने, समय पर काम करने और इसी प्रकार की अन्य अच्छी आदतों का निर्माण करना चाहिए।

11. **मूलप्रवृत्तियों को प्रोत्साहन** (Initiative to Instincts) शिशु के व्यवहार का आधार उसकी मूलप्रवृत्तियों होती है। अतः उनका दमन न करके सभी सम्भव विधियों से प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि दमन करने से शिशु का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

12. **क्रिया द्वारा शिक्षा** (Learning by Activity)- बालक कुछ प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है, जो उसे कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। अत: उसे उनके अनुसार कार्य करके शिक्षा प्राप्त करने की (Learning by doing) स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।

13. **खेल द्वारा शिक्षा** (Learning by Play) शिशु को खेल द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। इसका कारण बताते हुए स्ट्रेंग (Strang) (p. 157) में लिखा है- "**शिशु अपने और अपने संसार के बारे में अधिकांश बातें खेल द्वारा सीखता है**।" 14. 14चित्रों व कहानियों द्वारा शिक्षा (Education Training Through Picture and Stories)-शिशु की शिक्षा में कहानियों और सचित्र पुस्तकों का विशिष्ट स्थान होना चाहिए। इसके कारण पर प्रकाश डालते हुए क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) (op. cit. p. १57) ने लिखा है - **पाँच वर्ष का शिशु कहानी सुनते समय उससे सम्बन्धित चित्रों को पुस्तक में देखना पसन्द करता है।"**

15. **विभिन्न अंगों की शिक्षा** (Education of Various Parts of Body) शिशु की ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए इसका समर्थन करते हुए रूसो ने लिखा है- **बालक के हाथ, पैर और नेत्र उसके प्रारम्भिक शिक्षक हैं। इन्हीं के द्वारा वह पाँच वर्ष में ही पहचान सकता है, सोच सकता है और याद कर सकता है।"**